शर्मसार होता संसदीय लोकतंत्र

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की संसद जुलाई 22, को 2008 शर्मसार हो गई। इसे शर्मसार किया इस देश के लोकतंत्र के प्रहरी कहे जाने वाले जुलाई को संसद में सरकार 22 व 21 राजनीतिक दलों एवं सांसदों के आचरण ने। के विश्वास मत केप्रस्ताव पर वह सब कुछ हुआ जिसे सामान्य मर्यादाओं के विपरीत कहा जा सकता है। भारत के संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में पहली बार विश्वास मत का प्रस्ताव संसद में उस व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया गया जो न पक्ष में और न ही विपक्ष में मतदान कर सकता था। यह मर्यादाहीन आचरण किया उन दलों ने जो राष्ट्र को नेतृत्व देने का दम्भ भरते हैं तथा सामाजिक न्याय की सबसे बड़े पैरोकार भी बनते हैं। जिस देश ने आजादी के बाद जिस लोकतांत्रिक पद्धति को इस विश्वास के साथ स्वीकार किया हो कि आम जनता की आवाज को सत्ता के कानों तक पहुँचाया जा सके क्या वह सचमुच सही तरीके से अपना कार्य कर रही है? यदि यह सच होता तो आम आदमी के प्रश्न पर सत्ताधीशों के होठ बन्द नहीं होते तथा देश के राजनीतिक दलों की संवेदना उन तक अवश्य पहुँचती। उन लोगों से जुड़े मुद्दे पर संसद की कार्रवाई बाधित नहीं होती। यह दुर्भाग्य है इस देश का और उसकी संसदीय परम्पराओं का कि जो व्यक्ति सर्वथा अयोग्य है, राष्ट्र के जीवन मूल्यों एवं आदर्शों का विरोधी है, उसे ईमानदारी का तमगा लगवाकर यह देश प्रधानमंत्री के रूप में पिछले चार वर्षों से स्वीकार कर रहा है। अन्धे को रास्ता दिखाया जा सकता है लेकिन जो अन्धा होने का ढोंग कर रहा हो उसे क्या कहा जा सकता है? यह जानते हुए भी कि डॉमें जिस नई 1991 मनमोहन सिंह ने सन् . आर्थिक नीति के नाम पर जो आर्थिक गुलामी भारत पर लादने का प्रयास किया था, उसका दुष्परिणाम यह देश भुगत रहा है। गरीब और भी गरीब हुआ, कुछ चन्द लोगों को अरबपति बनाने से देश अमीर नहीं हो जाता है। आज भी करोड़ से 35 अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। इसी नई आर्थिक

लाख से 10 वर्षों में 10 नीति का दुष्परिणाम है कि पिछलेअधिक किसानों ने आर्थिक तंगी के कारण आत्महत्याएँ की हैं। हजारों मौतें भूख से हुई हैं और निरन्तर हो रही हैं। इस सब के बावजूद अगर डॉमनमोहन सिंह देश को आर्थिक . शक्ति के रूप में प्रस्तुत करने का दावा करते हैं तो यह उनका दुस्साहस ही कहा के 1991 जाएगा। सन्वित्तमंत्री डॉमनमोहन सिंह आज भारत के दुर्भाग्य से . प्रधानमंत्री हैं। आर्थिक गुलामी लादने के बाद अब ''राजनीतिक गुलामी'' के लिए परमाणु करार के नाम पर उतावलापन दिखा रहे हैं। आखिर जिस करार की शर्तें अस्पष्ट हों, जिस करार पर अमेरिकी रुख भी अस्पष्ट हो, उसे करने का क्या मतलब? फिर असैन्य क्षेत्र में भारतअमेरिका परमाणु समझौता मात्र ऊर्जा- की आवश्यकता के लिए कितना सत्य है यह आने वाला इतिहास बताएगा। क्योंकि जिस ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह समझौता हो रहा है उसकी कितनी पूर्ति होगी अभी कहा नहीं जा सकता, लेकिन यह सही है कि बिना सूझ- मनमोहन सिंह .बूझ और राष्ट्रहितों की चिन्ता किए बगैर डॉकी सरकार इस समझौते को कराना चाहती है। इतनी बड़ी पूंजी कहाँ से आएगी? प्रति यूनिट परमाणु विद्युत ऊर्जा का खर्चा जितना अधिक है क्या उपभोक्ता इसे वहन कर पाएगा? क्या सरकार ने सुरक्षा और संरक्षा के सम्बन्ध में व्यापक चर्चा की? रूस की ''चिर्नोविल'' परमाणु दुर्घटना जैसी दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना को रोकने के लिए क्या व्यवस्था होगी? आदिआदि प्रश्न हैं जो इस सब के बावजूद उछलने स्वाभाविक है। - इस परमाणु करार के माध्यम से सरकार राष्ट्रहितों कीअनदेखी कर रही है। संसद में जो तर्क कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के द्वारा दिए गए वह हास्यास्पद तो हैं ही देश को अंधेरे में रखने जैसा भी है। इससे संसदीय मर्यादाएँ भी कई बार तारतार हुईं। संसदीय मर्यादाओं को समाप्त करने में सामाजिक न्याय - के नाम पर जातीय विष वमन करने वाली समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, बहुजन समाज पार्टी आदि राजनीतिक दल सबसे अग्रणी रहे जिन्होंने सांसदों की खरीदफरोख्त की नई परम्परा का श्रीगणेश करके भारत के संसदीय लोकतंत्र की -

धज्जियाँ उड़ाने में कोई कोताही नहीं बरती। आज कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के आचरण से गाँधी और लोहिया की आत्माएँ अवश्य रो रही होंगी। सरकार ने सदन में येनकेन प्रकारेण विश्वास मत तो हासिल कर लिया लेकिन सदन में और - करोड़ जनता के दिल को तोड़ा है। 110 बाहर भी जो कुछ हुआ उसने देश की और सामाजिक न्याय के कथित पैरोकार राजनीतिक दलों के इस आचरण .ए.पी.यू से विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की संसदीय परम्पराएँ तारतार हुईं। भारत का - संसदीय लोकतंत्र शर्मसार हुआ है।